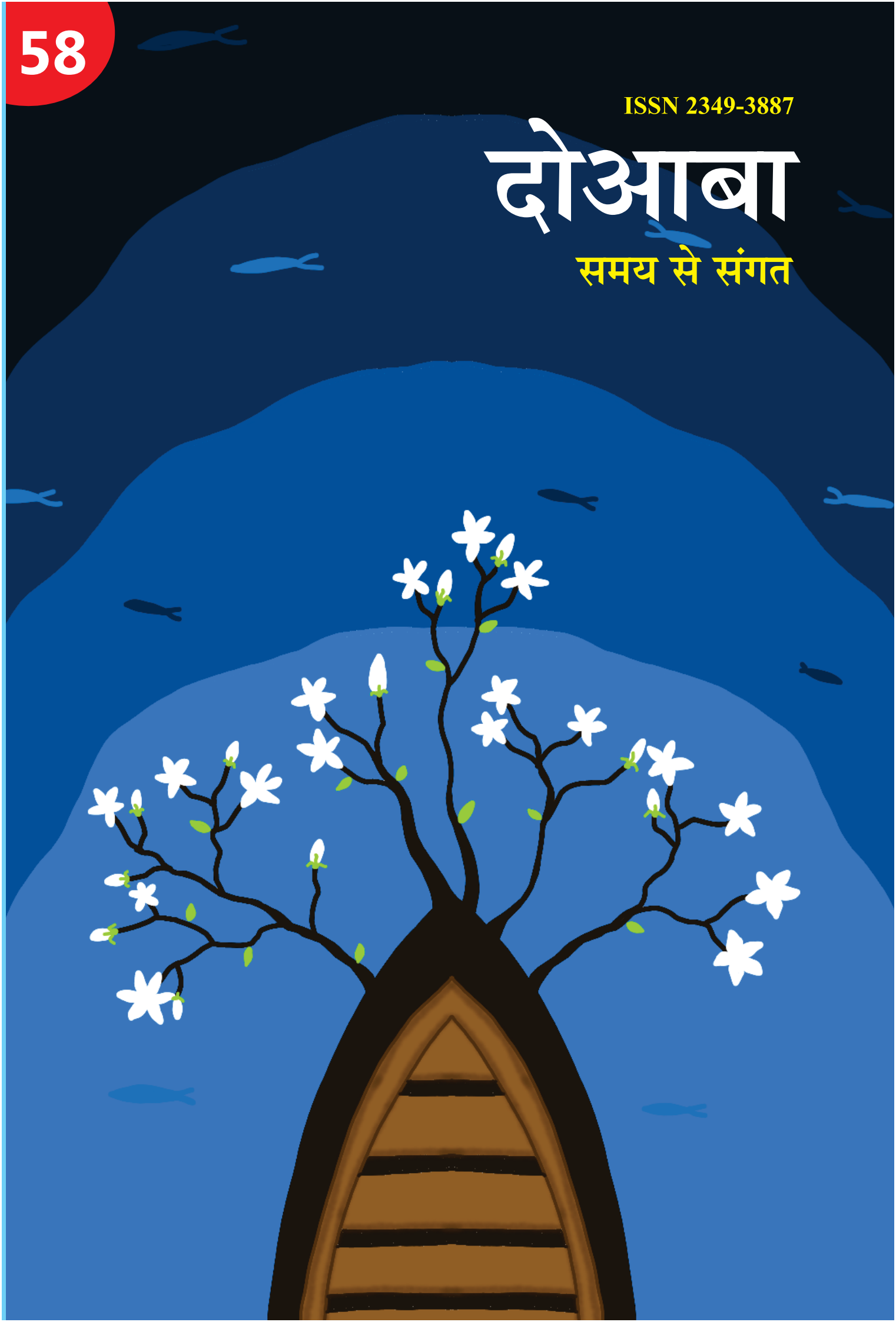
58

ISSN 2349-3887

दोआबा

समय से संगत



शेष समय में

पुराने एक मित्र ने
सहजता से पूछा –

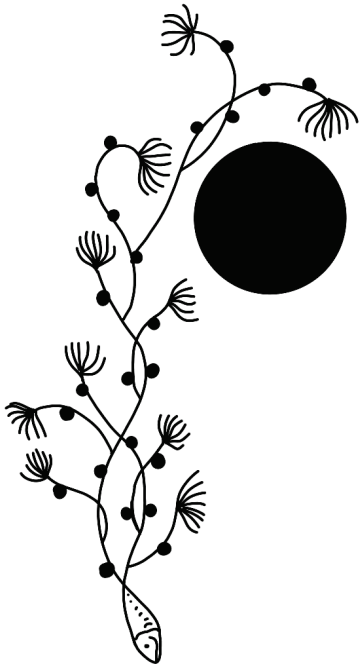
शेष समय में
क्या करते हो तुम

मैंने भी सहजता से ही
जवाब दिया –

शेष कहां बचा है समय
जिसे तुम शेष कहते हो
वह मैं नए कवियों की
ताज़ा कविताएं पढ़ने में
सर्फ़ करता हूं

उन्हें पढ़कर महसूस होता है
अब भी गतिमान है समय
और मैं उसका एक
जीवंत हिस्सा हूं

जाबिर हुसेन
'आईना किस काम का' से



अक्टूबर–दिसम्बर 2026

दोआबा

समय से संगत

दोआबा

समय से संगत

अक्टूबर-दिसम्बर 2026
वर्ष 20 : अंक 58

***संपादक* : जाबिर हुसेन**
मो.-09431602575

कवर एवं रेखांकन : अनुप्रिया

मानद सहयोग

लता प्रासर, पवन कुमार, जावेद एक़बाल

प्रबंध

सुबूही हुसेन, मोनिश हुसेन

कार्यालय सहयोग : सुनील हेम्ब्रम, विक्रम मरांडी

संपर्क
247 एम आई जी
लोहियानगर, पटना - 800 020
e-mail : doabapatna@gmail.com
मो.-08207535094

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाकीज़ा ऑफसेट
शाहगंज, पटना-800 006
मो.-09334116542

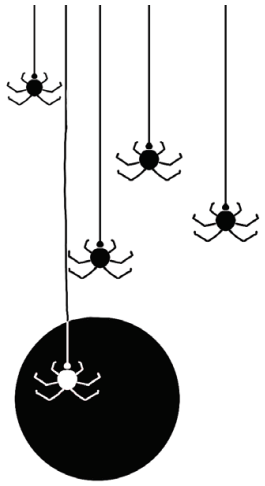
मूल्य : ₹200/-

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक का इन विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं।

अक्टूबर-दिसम्बर 2026

दोआबा

समय से संगत



अनुक्रम

जाबिर हुसेन : अपनी बात / 05

दरीचा

सुजाता राज्ञी : मेरे सांता क्लॉज का तुलसी प्रेम / 08
मनोज मोहन : आम आदमी का छविकार – रघु राय / 15
गोपाल शर्मा : गंगा की धड़कन डॉल्फिन / 21
विनीता बाडमेरा : यादों का कोलाज / 28
अश्विनी कुमार पंकज : इतिहास का एक कौतुक – मक्खलि गोसाल / 36
रुचि भल्ला : फलटन डायरी / 39
रमेश खत्री : यायावरी / 44
अशोक सिंह : आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना / 53
सरला माहेश्वरी : एक और टोबा टेक सिंह / 58

रचना-समय

नासिरा शर्मा : काली कबूतरी / 60
शंकर : लिटिल बॉस / 70
रजनी शर्मा : फिरंगी, नल मत लगवाय दियो / 80
राजा सिंह : मेरे पिता / 94
मुकुल जोशी : नाम / 104

कविता-समय

हरकीरत हीर / 107
राजेन्द्र नागदेव / 108
प्रीति सिन्हा / 111
विमल विश्वास / 118
सारिका भूषण / 122
प्रभा मुजुमदार / 124
नूपुर अशोक / 128
आर. चेतनक्रांति / 129
नितेश व्यास / 132
फूलचंद गुप्ता / 134
गिरीश पंकज / 136

मूल्यांकन

मालिनी गौतम : किसी छूटे हुए दिन में - अमेय कान्त / 140
किसी छूटे हुए दिन में (अमेय कान्त)
सुदर्शन वशिष्ठ : डूबती उतराती काग़ज़ की नाव / 150
काग़ज़ की नाव (राजेन्द्र राजन)
दीप्ति गुप्ता : स्मृति और करुणा का उज्ज्वल काव्यलोक / 154
गांव से लौटते हुए (पारुल)
अमरेन्द्र सुमन : संताली लोकगीतों में प्रकृति दर्शन / 158
संताली लोकगीतों में पर्यावरण का महत्व (चुण्डा सोरेन सिपाही)

दोआबा-57 (जुलाई-सितम्बर, 2026) / **162**
प्रेम कुमार / रास बिहारी गौड़ / शीतेन्द्र नाथ चौधुरी / पूनम सिंह
निधि अग्रवाल / राजेन्द्र राजन / वीरेन्द्र नारायण झा / हरिराम मीणा
जयप्रकाश मानस / लक्ष्मी पाण्डेय / पल्लवी मुखर्जी / शहंशाह आलम
शैलेन्द्र चौहान / केशव शरण / लता प्रासर / राजेश मिश्रा
अंशु सिंह / शिशुपाल कुमार

दोआबा-56 (अप्रैल-जून, 2026)
भूपेन्द्र सिंह : संवेदना से भरी रचनाएं / 199

□□



जाबिर हुसेन

पहचान खो रहा एक दायरा

पता नहीं क्यों आज सुबह से उर्दू के बड़े शायर हफ़ीज़ जालंधरी की दो पंक्तियां रह-रह कर याद आ रही हैं। साथ में, अपनी दो पंक्तियां भी, धीमी आग की तरह, हाफ़ज़े में सुलग रही हैं। पहले हफ़ीज़ जालंधरी की दो पंक्तियां –

देखा जो तीर खाके कमींगाह की तरफ़
अपने ही दोस्तों से मुलाक़ात हो गई

फिर अपनी दो पंक्तियां –

गोलियां सब लगी थीं सीने पर
जख़्म क्यों पीठ पर उभर आए

इन पंक्तियों में क्या ख़ास बात छिपी है! अपने कुछ दोस्त न जाने क्यों याद आ रहे हैं। शिकार पर नज़रें टिकाए अपने कुछ दोस्त शिकार की मुद्रा में छिपे वक़्त की राह देख रहे हैं। तीरअंदाज़ी का शौक़ पुराना है।

शिकार में जख़्मी परिंदे के जिस्म से बहता लहू उनकी पोशाक पर सुर्ख़ छींटों की तरह फैला हुआ है। आंखें हैं कि शिकारी की सधी हुई तीरअंदाज़ी की गिरफ़्त में हैं।

कौन जाने, अपनी खाट पर लेटा आदमी कब अपनी आख़िरी नींद सो जाए।

शिकारगाह में इस वक़्त गहरी तारीकी है। ठंडी हवाओं ने दोस्तों के चेहरों से वर्षों की थकान मिटा दी है। अपने दोस्तों को नज़दीक पाकर उनके चेहरे खिल उठे हैं।